अम्बेडकरवाद बनाम ब्राह्मणवाद
(Ambedkarism vs Brahminism)

अम्बेडकरवाद व ब्राह्मणवाद (Ambedkarism vs Brahminism) दो विचारो का टकराव है जिसमें अम्बेडकरवाद की विचारधारा न्याय, बंधुता, समानता, एवं स्वतंत्रता पर आधारित है जो मानवतावाद एवं वैज्ञानिकवाद को बढावा देती है वही दूसरी विचारधारा न्याय, बंधुता, समानता, एवं स्वतंत्रता के विरूद्ध है जो मानवतावाद एवं वैज्ञानिकवाद को बढावा नही देती। अम्बेडकरवाद की विचारधारा पोषक है तो वही ब्राह्मणवाद की विचारधारा शोषक है।

➢ अम्बेडकरवाद क्या है?
What is Ambedkarism?

अम्बेडकरवाद सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक एवं धार्मिक क्रांति है। अम्बेडकरवाद का मतलब मानवतावाद, वैज्ञानिकवाद है। बिना अम्बेडकरवाद के मानवतावाद एवं वैज्ञानिकवाद की कल्पना भी नही की जा सकती, क्योकि अम्बेडकरवाद केवल वाद नही है बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जीवन जिने की कला है। अम्बेडकरवाद सभी दुःखो का निवारण है। बिना अम्बेडकरवादी बने संसार मे कोई भी व्यक्ति दुःख से मुक्त नही हो सकता है। संसार मे जो कोई व्यक्ति अपने दुःखो से मुक्त होना चाहता है उसे अम्बेडकरवादी जरूर बनना पड़ेगा। अम्बेडकरवाद का मतलब आदर्श समाज का निर्माण करना भी है। जो कोई अम्बेडकरवादी होता है। जो अम्बेडकरवादी समाज होती है वह दुनियाँ की आदर्श समाज होती है। क्योकि अम्बेडकरवाद के मूल तत्व समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व एवं न्याय है। और जिस समाज मे यह मूल

तत्व होते है वह दुनियाँ की आदर्श समाज होती है। दुनियाँ के किसी भी वाद या धर्म में यह अम्बेडकरवादी मूलतत्व नही है, इसलिए संसार की कोई भी समाज बिना अम्बेडकरवाद के आदर्श नही बन सकती।

➢ अम्बेडकरवाद का जन्म कैसे हुआ?
How was Ambedkarism born?

किसी भी घटना को घटित होने के लिये वजह की आवश्यकता होती है इसलिये अम्बेडकरवाद का जन्म भी बहुत सारे कारणो से हुआ है जिनमें से एक कारण है बाह्मणवाद। बाह्मणवाद वह नासूर है जो भारत के इतिहास में भारत को वर्षो से या यूँ कहें की लगभग तीन हजार वर्षो से भारत को खोखला करने का काम कर रहा है।

आंबेडकरवाद का जन्म कैसे हुआ इसको समझने के लिए आपको सबसे पहले बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर के जीवन संघर्ष को पढ़ना अति आवश्यक है जो कि अंबेडकरवाद को समझने के लिए अपने आप में कुशल व पूर्ण है इसके अलावा डॉ अम्बेडकर द्वारा लिखी गई तीन पुस्तक नंबर एक "बुद्ध और उनका धम्म" नम्बर दो "बुद्ध और काल मार्क्स" नंबर तीन "भारत में क्रांति और प्रतिक्रांति", इन तीन किताबों को पढ़ने के बाद आपको यह स्पष्ट होगा कि आंबेडकरवाद क्या है आंबेडकरवाद ने क्यों जन्म लिया और अंबेडकरवाद की क्या महत्त्वता है। डॉक्टर अंबेडकर कहते हैं कि भारत का इतिहास बुद्ध की क्रान्ति और प्रतिक्रांति का संघर्ष रहा है इसके पुख्ता सबूत आपको डॉक्टर अंबेडकर द्वारा लिखित किताब "भारत की क्रान्ति और प्रतिक्रांति" में देखने को मिलेंगे आंबेडकरवाद को समझने के लिए आपको ब्राह्मणवाद भी समझना होगा ब्राह्मणवाद को समझने के बाद ही आप अंबेडकरवाद को बेहतर समझ पाएंगे।

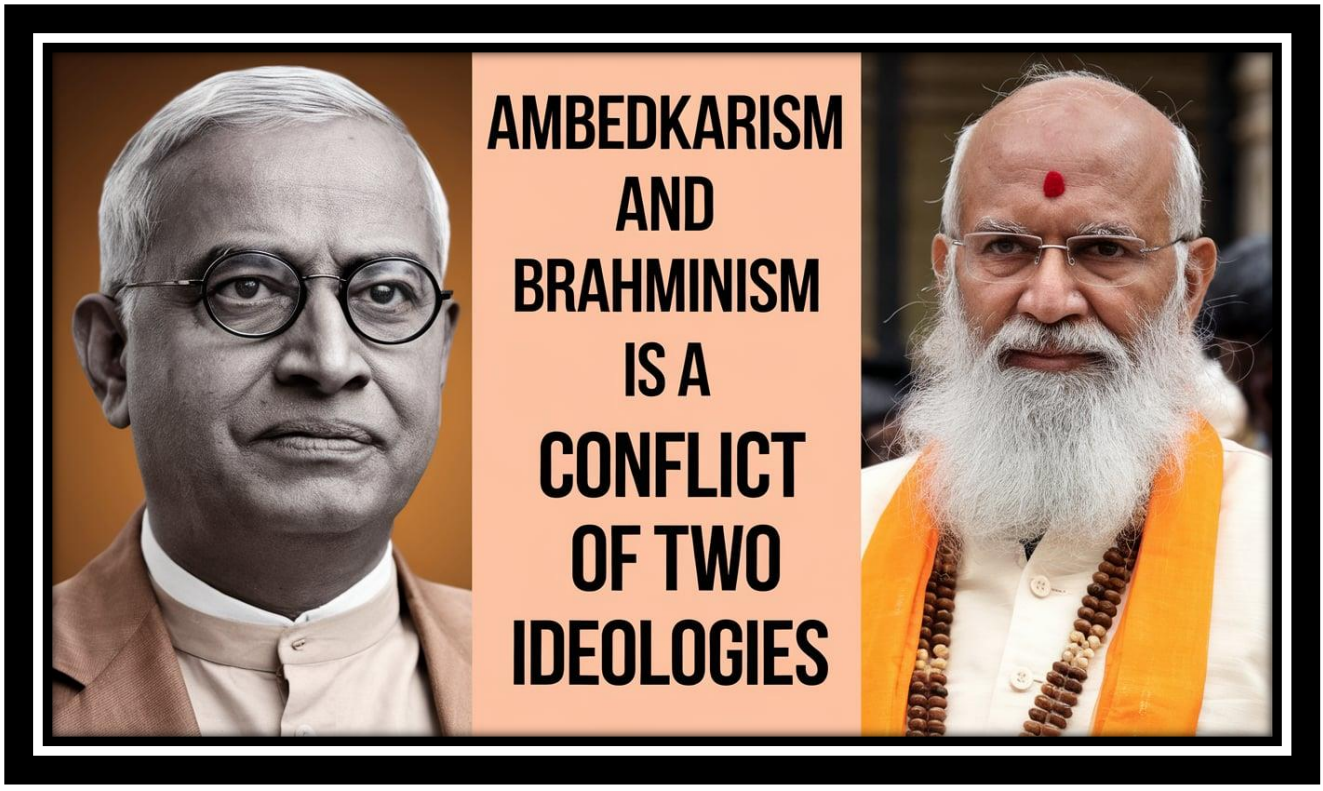

अंबेडकरवाद का जन्म डॉक्टर अंबेडकर के जन्म से हैं पूरी दुनिया उनके त्याग व संघर्ष को जानती व समझती है डॉक्टर अंबेडकर ने बचपन से ही शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, न्याय, समानता, बंधुता आदि के लिए संघर्ष किया है और संघर्ष करते हुए देखा था इसलिए उन्होंने अपने आप को समाज के लिए समर्पित किया और भारत में जितनी भी दलित शोषित पिछड़े वर्ग हैं उनकी आवाज बने, न केवल आवाज बनें उनके लिए मिसाल बने। यदि ब्राह्मणवाद और भारत के शोषित पिछड़े दलित वर्ग के बीच में यदि कोई खड़ा है तो वह "आंबेडकरवाद" है और यह इतना मजबूत है की लगातार लगभग पिछले 100 सालों से ब्राह्मणवाद, अंबेडकर व आंबेडकरवाद को गिराने व तोड़ने का प्रयास करता आ रहा है किंतु अंबेडकरवाद को ब्राह्मणवाद जितना तोड़ने व गिराने का प्रयास करता है आंबेडकरवाद उतना ही मजबूत होकर ज्यों का त्यों खड़ा रहता है और पहले की अपेक्षा ज्यादा मजबूत खड़ा होता है। इसीलिए बाबा साहब डॉ अंबेडकर के नाम क पूरे भारत में लाखों संगठन है जो अंबेडकरवाद को जिंदा रखते हैं और डॉक्टर अंबेडकर के नाम पर समाज में एकता, समानता, न्याय, बंधुता, शिक्षा, रोजगार, सम्पत्ति आदि के लिए संघर्ष करते हैं।

➢ ब्राह्मणवाद क्या है?

What is Brahmanism?

ब्राह्मणवाद खोखले विचारों की एक परिकल्पना है जिसमे ऐसा समाज रहता है जो एक को नीचा और दूसरों को ऊँचा समझता है और न केवल समझता है अपने धर्म ग्रंथों में यह लिख कर रखा है कि जो नीचा है वो नीचा सदा रहे वो न्याय की मांग की उम्मीद न करें, वो शिक्षा की उम्मीद न करें, वो रोजगार की उम्मीद न करें, वो संपत्ति की उम्मीद न करें, वह बंधुत्व की उम्मीद न करें, वह समानता की उम्मीद न करें। भारत में ब्राह्मणवाद की जड़ें इतनी मजबूत है की आजादी के लगभग 75 वर्ष बाद भी भारत में अलग अलग राज्यों में आज भी भारत के संविधान की प्रस्तावना जो कि न्याय, बंधुता अखंडता, एकता, समानता पर टिक्की है उस को चुनौती देती है। भारत के राजनीतिक कल्चर में ब्राह्मणवाद और दलित शोषित पिछड़े के बीच में यदि कोई खड़ा है तो वह भारत का संविधान है जिसे बाबा साहब डॉक्टर अंबेडकर ने कड़ी लगन और मेहनत के बावजूद बनाया था। ब्राह्मणवाद भारत के संविधान को रोजाना कमजोर करने का प्रयास करता है वह जानता है कि उनके और शोषित समाज के बीच यदि कोई खड़ा है तो वह आंबेडकरवाद और अंबेडकर का लिखा हुआ है संविधान है। ब्राह्मणवाद अशिक्षा का पोषक है, बेरोजगारो का पोषक है, असमानता का पोषक है, अन्याय का पोषक है, नफरत का पोषक है, ऊँच नीच का पोषक है, लिंग भेद का पोषक है, यदि ब्राह्मणवाद आपको अच्छे से समझना है तो भारत में भारत के इतिहास को अच्छे से समझना होगा तथा इनके द्वारा लिखे गए धर्मग्रंथों को वैज्ञानिक, तार्किक दृष्टिकोण से पढ़ना होगा, तब आपको यह ज्ञात होगा की असली ब्राह्मणवाद क्या है।

➢ जय भीम क्या है?

What is Jai Bhim?

1. जय भीम कोई चुनाव या राजनैतिक नारा नही है। न ही किसी व्यक्ति, समूह या क्षेत्र का एकाधिकार है।
2. जय भीम प्रण है कि हम संविधान की रक्षा करेंगे।
3. जय भीम एक अपील है शिक्षित बनो, संगठित बनो, संघर्ष करो की।
4. जय भीम एक वादा है पे बैक टू सोसायटी का।
5. जय भीम एक वादा है भारत की एकता के लिये मर मिटने का।
6. जय भीम एक क्रान्ति है असमानता, लिंग भेद, अंधविश्वास के खिलाफ।
7. जय भीम एक भावना है निर्भीकता की।
8. जय भीम एक परंपरा है स्वतंत्रता, समानता, बंधुता, न्याय और धर्मनिरपेक्षता की।
9. जय भीम एक उत्तरदायित्व है बुद्ध, अशोक, कबीर, ज्योतिबा, सावित्रीबाई और बाबासाहब के विचारों का।
10. जय भीम एक योजना है व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और दुनिया मे लोकतंत्र, नैतिकता, विज्ञान, शान्ति और विकास के लिए।

अम्बेडकरवाद का मतलब ही बुद्धिष्ट भी है। यदि कोई यह कहता है, की मै अम्बेडकरवादी तो हूँ लेकिन बुद्धिष्ट नही हूँ। तो वह सफेद झूठ बोल रहा है। वह कोई अम्बेडकरवादी नही है। केवल अज्ञानी जनता को गुमराह करने का काम कर रहा है। वास्तव मे बिना अम्बेडकरवादी बने कोई भी व्यक्ति बुद्धिष्ट नही बन सकता और बिना बुद्धिष्ट बने कोई भी व्यक्ति अम्बेडकरवादी नही बन सकता। अम्बेडकरवाद और बुद्धिज्म एक सिक्के के दो पहलू है। जिस प्रकार सिक्के के लिए दो पहलुओं का महत्व है। उसी प्रकार आपस मे अम्बेडकरवाद और बुद्धिज्म का महत्व है। जैसे सिक्के के दो पहलुओ मे से किसी को भी अलग नही किया जा सकता उसी प्रकार अम्बेडकरवाद और बुद्धिज्म को भी अलग नही किया जा सकता। संसार के लोग जितनी जल्दी अम्बेडकरवादी बनेगे उतनी ही जल्दी उनका कल्याण होगा।

संदर्भ सूची **(Bibliography) -**

- बुक्स
- इंटरनेट
- सोसल मीडिया

कपिल बौद्ध (LL.B)

(Ambedkarism vs. Brahminism)

Ambedkarism and Brahminism is a conflict of two ideologies in which the ideology of Ambedkarism is based on justice, fraternity, equality and freedom which promotes humanism and scientificism, while the other ideology is against justice, fraternity, equality and freedom which does not promote humanism and scientificism. The ideology of Ambedkarism is nourishing, while the ideology of Brahminism is exploitative.

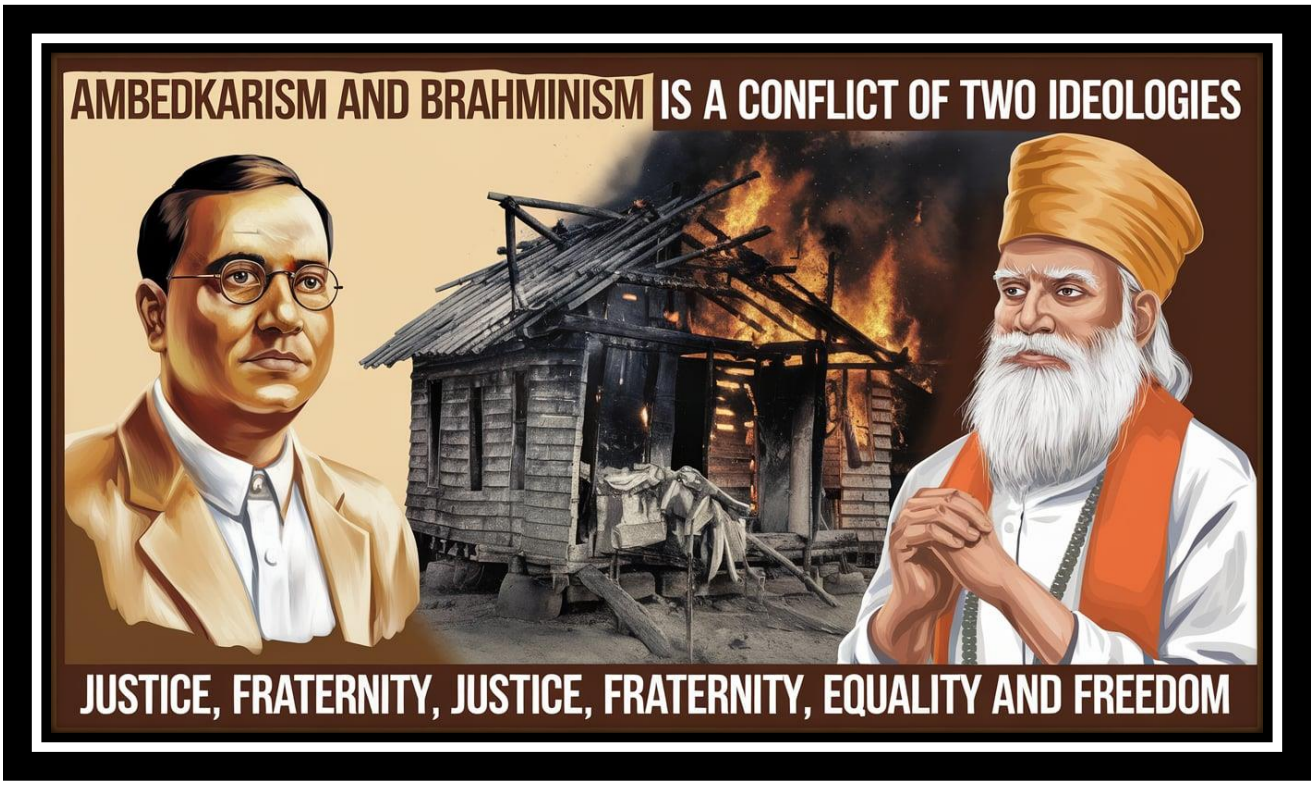

What is Ambedkarism?

Ambedkarism is social, economic, political and religious revolution. Ambedkarism means humanism, scientificism. Humanism and scientificism cannot be imagined without Ambedkarism, because Ambedkarism is not just an ideology but the art of living life from a scientific point of view. Ambedkarism is the solution to all sorrows. No person in the world can be free from sorrow without becoming an Ambedkarite. Any person in the world who wants to be free from his sorrows must become an Ambedkarite. Ambedkarism also means building an ideal society. Anyone who is an Ambedkarite. The Ambedkarite society is the ideal society of the world. Because the basic elements of

Ambedkarism are equality, freedom, fraternity and justice. And the society which has these basic elements is the ideal society of the world. This Ambedkarite basic element is not present in any ism or religion of the world, so no society of the world can become ideal without Ambedkarism.

How was Ambedkarism born?

There is a need for a reason for any event to happen, hence Ambedkarism was also born due to many reasons, one of which is Brahminism. Brahminism is that sore which has been hollowing out India for years in the history of India or say for about three thousand years.

To understand how Ambedkarism was born, it is very important for you to first read the life struggle of Baba Saheb Dr. Bhimrao Ambedkar, which is efficient and complete in itself to understand Ambedkarism. Apart from this, three books written by Dr. Ambedkar are number one **"Buddha and his Dhamma"**, number two **"Buddha and Karl Marx"**, number three **"Revolution and Counter-revolution in India"**. After reading these three books, it will be clear to you what Ambedkarism is, why Ambedkarism was born and what is the importance of Ambedkarism. Dr. Ambedkar says that the history of India has been a struggle between Buddha's revolution and counter-revolution. You will find strong evidence of this in the book "Bharat ki Kranti aur Pratikranti" written by Dr. Ambedkar. To understand Ambedkarism, you will also have to understand Brahminism. Only after understanding Brahminism, you will be able to understand Ambedkarism better. Ambedkarism was born from the birth of Dr. Ambedkar. The whole world knows and understands his sacrifice and struggle. Dr. Ambedkar struggled for education, health, employment, justice, equality, fraternity etc. since his childhood and was seen struggling, so he dedicated himself to the society and became the voice of all the Dalits and exploited backward classes in India. Not only became a voice, but also became an example for them. If there is anyone standing between Brahminism and the exploited backward Dalit class of India, it is **"Ambedkarism"** and it is so strong that for the last 100 years, Brahminism has been trying to destroy Ambedkar and Ambedkarism, but the more Brahminism tries to destroy Ambedkarism, the stronger Ambedkarism stands and stands as it is and stands stronger than before. That is why there are lakhs of organizations in the name of Baba Saheb Dr. Ambedkar all over India

that keep Ambedkarism alive and struggle for **unity, equality, justice, fraternity, education, employment, property** etc. in the name of Dr. Ambedkar.

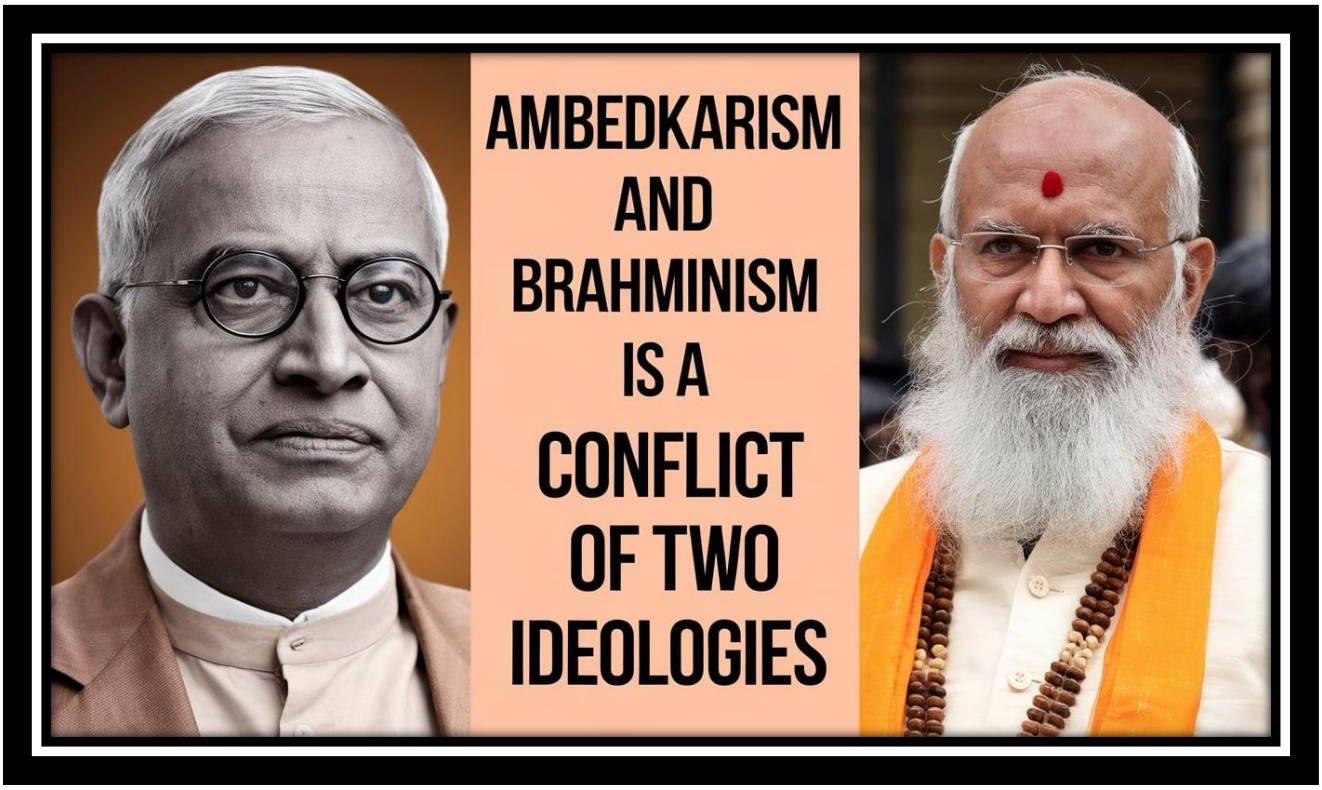

What is Brahminism?

Brahminism is a concept of hollow ideas in which there lives a society that considers one to be low and others to be high and not only this, it is written in its religious texts that the one who is low should always remain low, he should not expect justice, he should not expect education, he should not expect employment, he should not expect property, he should not expect fraternity, he should not expect equality. The roots of Brahminism in India are so strong that even after almost 75 years of independence, in different states of India, even today the preamble of the Constitution of India which is based on justice, fraternity, integrity, unity, equality is challenged. In the political culture of India, if there is anything standing between Brahminism and the Dalit exploited backward, then it is the Constitution of India which was made by Baba Saheb Dr. Ambedkar despite his hard work and dedication. Brahminism tries to weaken the Constitution of India every day, it knows that if there is anything standing between them

and the exploited society, then it is Ambedkarism and the Constitution written by Ambedkar. Brahminism is the promoter of illiteracy, unemployment, inequality, injustice, hatred, discrimination, gender discrimination. If you want to understand Brahminism well, then you will have to understand the history of India well and read the scriptures written by them from a scientific, logical point of view, then you will know what the real Brahminism is.

What is Jai Bhim?

1. Jai Bhim is not an election or political slogan. Nor is it the monopoly of any person, group or area.

2. Jai Bhim is a pledge that we will **protect the Constitution**.

3. Jai Bhim is an appeal to be educated, to be **organized, to struggle**.

4. Jai Bhim is a promise to **pay back to society**.

5. Jai Bhim is a promise to die for the **unity of India**.

6. Jai Bhim is a revolution against **inequality, gender discrimination, superstition**.

7. Jai Bhim is a feeling of **fearlessness.**

8. Jai Bhim is a tradition of **freedom, equality, fraternity, justice and secularism**.

9. Jai Bhim is a responsibility of the thoughts of **Buddha, Ashoka, Kabir, Jyotiba, Savitribai and Babasaheb.**

10. Jai Bhim is a scheme for democracy, morality, science, peace and development in the **individual, family, society, country and the world.**

Ambedkarism also means Buddhism. If someone says that I am an Ambedkarite but not a Buddhist, then he is telling a white lie. He is not an Ambedkarite. He is only misleading the ignorant public. In reality, no person can become a Buddhist without becoming an Ambedkarite and no person can become an Ambedkarite without becoming a Buddhist. Ambedkarism and Buddhism are two sides of the same coin. Just as two sides are important for a coin, in the same way Ambedkarism and Buddhism are important. Just as none of the two sides of a coin can be separated, in the same way Ambedkarism and Buddhism also cannot be separated. The sooner the people of the world become Ambedkarites, the sooner will they be benefited.

Bibliography -

- Books
- Internet
- Social Media

(Kapil Bauddh)